माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय भावना —

हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर रीतिकाल के अनेकानेक कवियों ने राष्ट्रप्रेम से सम्बन्धित रचनाएँ कीं किन्तु आधुनिक काल जैसी भावभूमि उन कवियों को नहीं मिल पायी थी। माखन लाल चतुर्वेदी द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि हैं। हिन्दी साहित्य में "एक भारतीय आत्मा" के नाम से विख्यात हैं। इनकी कविता में अनुभूति, भावना, आदर्श, त्याग, राष्ट्रप्रेम समाज कल्याण आदि का बड़ा महत्व है। इन्हें इनकी रचना 'हिमतरंगिनी' के लिए 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है ~~[illegible]~~

~~[illegible] साहित्य अकादमी [illegible]~~

सन 1920 में महात्मा गाँधी द्वारा सत्याग्रह आन्दोलन जो चलाया गया उन्होंने न केवल तन से बल्कि वाणी और लेखनी के द्वारा औरों को भी प्रोत्साहित किया। इस आंदोलन से प्रभावित होकर राष्ट्रीयता के संस्कार को लोक मानस में भरने के लिए खण्डवा (मध्यप्रदेश) में "प्रान्तीय राजनीतिक परिषद" की स्थापना की। सन 1923 में नागपुर में

ऐतिहासिक 'झंडा सत्याग्रह' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर इन्होंने इस आन्दोलन को नवीन दिशा एवं शक्ति प्रदान की। सन 1924 में गणेशशंकर विद्यार्थी की गिरफ्तारी पर कानपुर जाकर 'प्रताप' का संपादन एवं प्रभा के पुनर्प्रकाशन ने उत्तर भारत में आन्दोलन की आँधी ला दी। 'कर्मवीर' की राष्ट्रीय विचारधारा ने देशभक्तों को इतना प्रभावित किया कि देश के लिए बलिदान होना सबने अपना अन्तिम लक्ष्य मान लिया।

सरकार की तरफ से सत्याग्रहियों - स्वतंत्रता के दीवानों को जो भीषण दर्दनाक यातनाएँ दी जा रही थीं, वे असह्य थी। धन्य है माखनलाल चतुर्वेदी जी की सहनशक्ति जिसमें इस तरह के भाव निकलते बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ तो वासत के आभूषण हैं। जिसकी कोख में हमने जन्म लिया है। पला हूँ, चलना और मचलना भी सीखा हूँ। उस माँ के लिए सब कुछ सहर्ष स्वीकार है —

"जंजीरें हैं, हथकड़ियाँ हैं नेक सुहागन की लड़ियाँ हैं।
काले जी के काले साजन, काले पानी की घड़ियाँ हैं"

स्वतंत्रता आन्दोलन का इससे अधिक और कहाँ आत्म त्याग एवं

आत्म बलिदान का भाव देखने को मिलता है- जहाँ विजय मारने में नहीं अपितु मरने में होती है। वीरता शीश काटने से ज्यादा कटवाने में है। विचित्र है इस महान आत्मा का बलिदान एवं स्वतंत्रता संग्राम जहाँ हृदय की प्यास पर रक्त पीकर नहीं वरन अपना ही लहू बहाकर बुझानी पड़ती है। पुष्प न तो सुरबालाओं के गहनों में गुँथना चाहता है और न ही किसी प्रिय और प्रिया के गले का हार बनकर उनकी शोभा बढ़ाने को उत्सुक है। सम्राटों के शवों पर भी जाने की उसकी लालसा नहीं है। देवों के सिर पर चढ़कर वह अपना महत्व नहीं दिखाना चाहता। उनकी सर्वप्रिय मनचाही जगह वह है जिस स्थान पर देश प्रेमियों का देश की रक्षा करते हुए रक्त की बूंद गिरी है-

"मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक। मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।"

भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय जागरण, त्याग, बलिदान एवं सांस्कृतिक गौरवाभिमान की दृष्टि से चार गीत विशेष महत्व रखते हैं। वे हैं (जन गन मन) राष्ट्रगान, वन्दे मातरम, सारे जहाँ से अच्छा तथा पुष्प की अभिलाषा। इन गीतों में चतुर्थ गीत माखनलाल चतुर्वेदी की वाणी से निःसृत हुआ है। संसार

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कि किसी अन्य कवि ने स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए आत्म-बलिदान की ऐसी कामना नहीं की है। —

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक

वे राष्ट्रमुक्ति के समय वीणा की स्वर-लहरी नहीं सुनना चाहते अपनी प्रत्यंचा को संभाले हुए भयंकर उन्माद को जाग्रत रखना चाहते हैं —

क्या वीणा की स्वर लहरी का
सुनूँ मधुरतर नाद?
छिः! मेरी प्रत्यंचा भूले
अपना यह उन्माद!

माखन लाल चतुर्वेदी

सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Date 23/04/19
Page 5

अनूठे हिन्दी रचनाकार थे।

माखन लाल चतुर्वेदी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिन्दी रचनाकार थे। राष्ट्रीयता माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य का कलेवर है तथा रहस्यात्मक प्रेम उसकी आत्मा है। इस प्रकार निःसंदेह कहा जा सकता है कि माखन लाल चतुर्वेदी में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner